आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : ग्यारहवां | अंक : दूसरा | जून-2013

04 ● आण के दवारे उत्ते

05 ● अमृत वेला

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन पर बिठाने से पहले प्रेमियों को संदेश

07 ● कोई तेरा मित्र नहीं

(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

19 ● सवाल-जवाब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

संपादक -
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
मो. 099 50 55 66 71 (राजस्थान)
मो. 098 71 50 19 99 (दिल्ली)

उपसंपादक -
नन्दनी/ माया रानी

विशेष सलाहकार -
गुरमेल सिंह नौरिया
मो. 099 28 92 53 04

संपादकीय सहयोगी -
रेनू सचदेवा
सुमन आनन्द व
परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जून 2013 -135- मूल्य - पाँच रुपये

आण के दवारे उज़े बैठे मेरे दातेया

आण के दवारे उज़े बैठे मेरे दातेया,
अपणियां रूहां नूं संभाल मेरे दातेया,
अपणियां रूहां नूं संभाल (2)

1. नरकां च सुटणे लई काल है वंगारदा,
रूहां दे पसोणे नूं बहुत रूप धारदा, (2)
वास्ता ई रब दा बचाईं मेरे दातेया,
दुःखियां दी सुणके पुकार मेरे दातेया,
अपणियां रूहां नूं .....

2. कूड़ दा हनेरा जग उज़े आ के छा गया,
छुप गया सच उड़ अंबरां नूं धा गया, (2)
दया ते धर्म घबराऐ मेरे दातेया,
औज़े वेले पुछ लेओ सार मेरे दातेया,
अपणियां रूहां नूं .....

3. सारियां जगंहां दे उज़े पाऐ फंदे काल ने,
जाल जो बिछाऐ ऐहे टुटने मुहाल ने, (2)
दरगाह च आण के बचाईं मेरे दातेया,
सतगुरु दीन-दयाल, मेरे दातेया,
अपणियां रूहां नूं .....

4. धन कृपाल धन सावन प्यारेया,
तपदे 'अजायब' नूं पलां दे विच ठारेया, (2)
संगत नू दर्श दिखाईं मेरे दातेया,
भुलिऐ ना तेरा उपकार मेरे दातेया,
अपणियां रूहां नूं .....

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन पर बिठाने से पहले संदेश

अमृत वेला

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

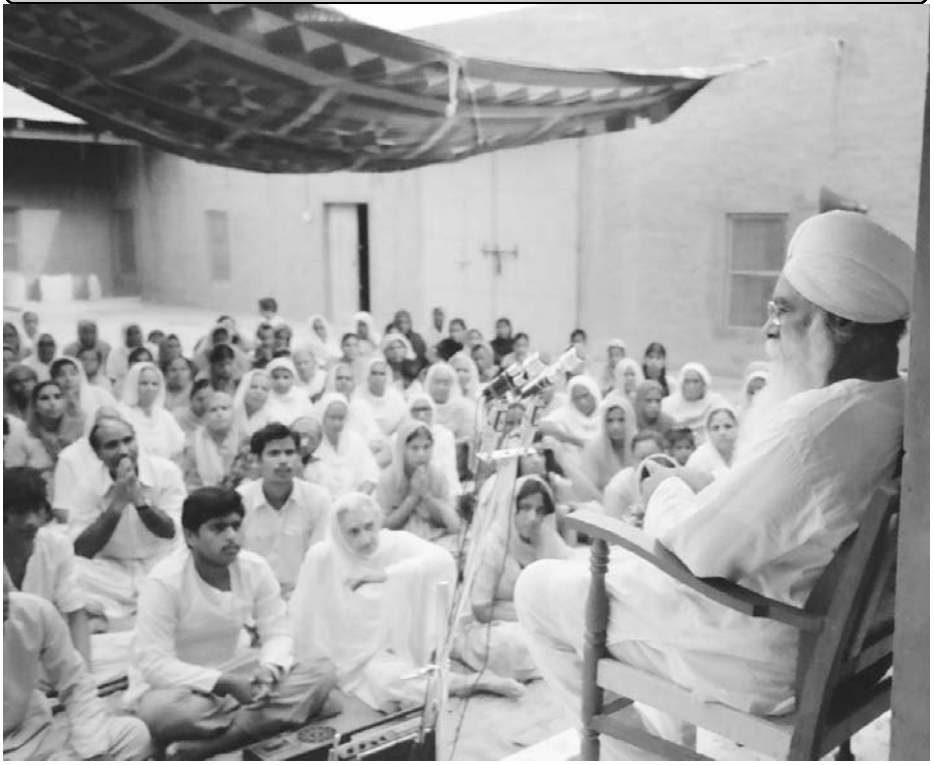

परमपिता सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम किया और अपनी भक्ति का मौका दिया है। हिन्दुस्तान में लड़की माता-पिता के घर में जन्म लेती है। माता-पिता हर तरह से अपनी प्यारी बेटी की रक्षा करते हैं और उसकी सब जरूरतें पूरी करते हैं लेकिन वे यह नहीं भूलते कि एक दिन इस लड़की ने पराए घर चले जाना है, यह हमारे पास पराई अमानत है।

बचपन से ही लड़की के दिल-दिमाग में अपने पति से मिलकर अपना घर बसाकर शान्ति से रहने की इच्छा होती है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''आत्मा रूपी कन्या ने शरीर में जन्म इसलिए लिया है कि मैं अपने पति-परमात्मा से मिलकर शान्ति से रह सकूं। कब मेरा पति-परमात्मा से मिलाप होगा! कब 'शब्द' से मेरी शादी होगी! आत्मा रूपी कन्या का दिल अंदर ही अंदर खटकता रहता है कि कब मुझे शब्द रूपी सुहाग मिलेगा?''

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि आत्मा भी शरीर के अंदर है और शब्द रूप परमात्मा भी शरीर के अंदर है ये इकट्ठे रहते हैं लेकिन न आत्मा परमात्मा से मिली न सुहागन हुई।

एका संगत एका गृह वसदे मिल बात न करदे भाई।

प्यारेयो! सन्त-महात्मा हमें दिन-रात जो कुछ भी समझा रहे हैं उसका यही मकसद है कि हमें 'शब्द' मिल गया है आत्मा उस शब्द के दायरे में आ चुकी है इसे सदा का सुहाग मिल गया है। मसला तो यह है कि हम कब उस शब्द पति को अपने अंदर प्रकट करके उस सुहाग का जीते जी आनन्द लें सके और दुनिया को छोड़ने के बाद भी अपने पति के घर जाकर आराम से चैन से शान्ति से रह सकें।

हाँ भाई! यह सुबह का समय **अमृत वेला** है। महाराज जी कहा करते थे, ''इस समय आत्मा ने ताजा-ताजा शरीर के अंदर प्रवेश किया होता है अगर हम इस समय 'सुरत-शब्द' का अभ्यास करें तो आत्मा आसानी से तीसरे तिल पर एकाग्र होकर शब्द के साथ जुड़ सकती है।'' इस अमृतवेला का फायदा उठाकर अपनी आँखें बंद करके सबने अपना सिमरन शुरू करना है।

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

कोई तेरा मित्र नहीं

स्वामी जी महाराज की बानी | 16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

मित्र तेरा कोई नहीं संगियन में। पड़ा क्यों सोवे इन ठगियन में।।
चेत कर प्रीत करो सतसंग में। गुरु फिर रंग दें नाम अरँग में।।

हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है। आत्माएं परमात्मा से बिछुड़कर इस काल के देश में आईं। काल ने सतपुरुष की बहुत भक्ति की, सतपुरुष ने खुश होकर आत्माएं काल को सौंप दी। जब आत्माएं परमात्मा से बिछुड़ने लगी तब परमात्मा ने कहा, ''मैं काल की सेवा के वश होकर आपको इसके साथ भेज रहा हूँ।'' आत्माओं ने कहा कि आप हमें इसके साथ भेज रहे हैं अगर यह हमें कष्ट देगा तो हमारी मदद कौन करेगा? आप सबने अनुराग सागर पढ़ा होगा इसे इंगलिश में छपे हुए (Ocean of Love)* काफी समय हो गया है।

उस समय सतपुरुष ने आत्माओं के साथ वायदा किया कि मैं काल की सेवा से खुश होकर आपको इसके सुपुर्द कर रहा हूँ। यह चौरासी लाख योनियों के बाद एक बार आपको इंसानी जामा जरूर देगा। उस इंसानी जामें का मकसद सिर्फ मुझसे मिलने का ही होगा। जिन आत्माओं के अंदर मुझसे मिलने की तड़प, प्यार होगा तब मैं भी इंसानी जामें में आकर विरह-तड़प वाली आत्माओं की बाँह पकड़कर अपने साथ अपने देश ले जाऊँगा।

किसी राजा की लड़की ने राजकुमार से शादी करवाकर महारानी बनना था, महलों में रहना था लेकिन उसने अपने राजघराने को छोड़कर भंगी के साथ शादी कर ली। महलों में जाने

* प्यार का सागर-2011

की बजाय उसे सड़कों पर झाड़ू लगाना पड़ा। इसी तरह आत्मा सतपुरुष की अंश है, इसका मकसद किसी सन्त-महात्मा के पास जाकर 'नाम' प्राप्त करना था, अपने महल अपने पिता के पास वापिस जाकर सतपुरुष की पुत्री कहलवाना था। हमारा मन भंगी है। इसने मन के साथ प्यार लगा लिया अपने घर को भूल गई। मन ने इसे फँसाया हुआ है कि यह तेरी माता है, यह तेरा पिता है, यह तेरी बहन है, यह तेरा भाई है और यह तेरा मुल्क है, कौम है।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''तू ठंडे दिल से सोचकर देख! **कोई तेरा मित्र नहीं** मौत आने पर तेरे संबंधी, मित्र, औरत या पति कोई तेरी मदद करेगा? ये सारे मीठे ठग हैं। सब अपनी-अपनी गरज से प्यार करते हैं। जब किसी की गरज पूरी हो जाती है फिर कौन किसको पूछता है? पहले तो हम जीते जी ही एक-दूसरे को त्याग देते हैं। मौत के बाद हम यही कहते हैं कि अब इसके साथ हमारा क्या रिश्ता है? दिन में ही इसका संस्कार करें।'' आप ब्रह्मानंद महात्मा का भजन पढ़ते हैः

गुरु बिन कौन सहाई नरक में गुरु बिन कौन सहाई रे।
मात पिता सुत बंधप नारी स्वार्थ के सब भाई रे।

कोई तेरा मित्र नहीं। मियाँ-बीवी का रिश्ता सारी जिंदगी इकट्ठे रहने का होता है। कबीर साहब कहते हैंः

घर की नार बहुत हित जास्यो सदा रहत संग लागी।
जब ही हंस तजी यह काया भूत भूत कर भागी।

मैं हमेशा ही बताया करता हूँ कि सतगुरु के बिना धर्मराज की कचहरी में **कोई तेरा मित्र नहीं**। सतगुरु के बिना आपको कोई नहीं छुड़ा सकता। स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप इन मीठे ठगों से तभी छुटकारा पा सकते हैं जब आप सतसंग में जाना शुरू

कर देंगे। जब आप सतसंग पर अमल करेंगे तो आपके अंदर विरह और तड़प पैदा होगी। सतगुरु हमें निर्मल रंग में रंग देते हैं; 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ देते हैं।''

सतसंग में जाने का मतलब यह नहीं कि आप पारिवारिक जिम्मेवारियां छोड़ दें। सन्त इन्हें मीठे ठग इसलिए कहते हैं कि ये लोग मतलब के है। आपको समाज में जन्म मिला है तो वहाँ माता-पिता, बहन-भाई भी हैं लेकिन आप इनकी असलियत को समझें। अगर आपको सेवा के लिए सामग्री मिली है तो उससे सेवा का काम लें न कि इन पदार्थों के सेवक बन जाएं।

सुपुच आने-जाने वाले राहगीरों को लूट लेता था उन्हें मार देता था। एक बार कबीर साहब उस रास्ते से गुजर रहे थे तो सुपुच ने कबीर साहब से कहा, ''तुम्हारे पास जो कुछ है उसे रख दो।'' कबीर साहब ने सुपुच से कहा, ''मैं यहीं बैठा रहूँगा कहीं नहीं जाऊँगा। तू जिनके लिए ये चोरियां और कत्ल करता है उनसे पूछकर आ कि क्या वे तेरा पाप उठाएंगे?'' सुपुच ने घर जाकर अपने परिवार के लोगों से पूछा कि मैं जो गुनाह करता हूँ क्या उसमें आप मेरा पाप बँटवाएंगे? परिवार के लोगों ने कहा कि हम तेरा पाप क्यों बँटवाएंगे? हमें तू चाहे कहीं से भी लाकर दे। सुपुच ने आकर कबीर साहब के सामने सिर झुका दिया और कहा कि उनमें से कोई भी तैयार नहीं। आप मुझे इस अपराध से बचाएं। जब सुपुच ने नम्र होकर 'शब्द-नाम' माँगा तो कबीर साहब ने उसे 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ दिया।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''ऐसा नहीं कि पुन्नी ही हमारे पास आएं पापी न आएं। जब नाम ले लिया तो जहाँ खड़े हो वहीं रुक जाएं।'' जो कुछ पहले किया है सन्त उसे बख्श देते हैं,

आगे के लिए रास्ते पर डाल देते हैं कि आगे कोई पाप या ऐब न करें। अगर हम नाम लेकर ऐब पाप करते हैं तो हम गुरु के साथ विश्वासघात कर रहे होते हैं। राम हत्यारा तो बख्शा जाता है लेकिन गुरु हत्यारा कभी नहीं बख्शा जाता। कबीर साहब कहते हैं:

कबीरा हरि के रूठते गुरु की शरणी जाए।
कहे कबीर गुरु रूठते हरि न होए सहाए।

मन मेरा पंखी भया उड़कर चढ़या आकाश।
स्वर्ग लोक खाली पड़या साहब संतन पास।

सन्तों की दया दृष्टि होती है आगे हमारे बर्तन का सवाल है। जिस ताकत ने हमारे पाप माफ करने हैं भूल बख्शवानी है और परमात्मा के साथ मिलवाना है वह ताकत सन्तों के अंदर प्रकट होती है। सन्तों ने अपने गुरु की दया से और अपनी मेहनत से उस ताकत को हासिल किया होता है। वह ताकत कण-कण में व्यापक है। गुरु ने उस ताकत को अपने ऊपर मेहरबान किया होता है

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप अपने ख्याल को परिवार, समाजों से निकालकर सतसंग में जाएं, सतसंग पर अमल करें। **कोई तेरा मित्र नहीं**। आप सतसंग में जो सुनते हैं उसको अपने ऊपर ढ़ालें। जब सतसंग ही हमारा सब कुछ बन जाता है तो सन्त-महात्मा हमें निर्मल रंग में रंग देते हैं वह रंग कभी नहीं उतरता।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''तराजु का जो पलड़ा भारी होगा वह नीचे बैठ जाएगा और हल्का ऊपर आ जाएगा। जिस तरफ हमारा प्यार है अंत समय हमें वही ख्याल आएंगे अगर सन्तों और सतसंग के साथ प्यार है तो हम सन्तों को याद करेंगे तो सन्त हमें परमात्मा के पास ले जाएंगे, अगर दुनिया के साथ प्यार है तो उस समय दुनिया ही याद आएगी।''

मेरा एक दोस्त है, तकरीबन पच्चीस साल से हमारी दोस्ती और प्यार है। मैं आमतौर पर उसे समझाता रहा हूँ कि परिवार के मोह में ज्यादा नहीं फँसना चाहिए लेकिन वह हमेशा ही बच्चों की माला फेरता है। मैं पिछले साल बम्बई गया हुआ था। वह थोड़ा सा बीमार हुआ कोई खास तकलीफ नहीं थी। वह कहने लगा कि लड़कों को बुलाओ। जब मैं बम्बई से वापिस आया तो मैंने यह बात सुनी। मैंने हँसकर उससे कहा, ''अफसोस की बात है कि मैं तुझसे जितना प्यार करता हूँ उतना प्यार तो तेरे सारे लड़के भी नहीं करते। मैं तुझे बिल्कुल भी याद नहीं आया! मैं हमेशा तुझसे कहता रहा हूँ कि आखिरी वक्त तुझे यह ख्याल तंग करेगा। अब वह पछताता है कि मैंने गलती की अब ऐसा नहीं करूंगा। मैंने कहा कि मौत तुझे यह नहीं कहेगी कि लड़को को बुला ले। जब मौत आती है तो किसी को बुलाने या बात करने का मौका भी नहीं देती।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आपसे और कुछ नहीं होता तो आप सन्तों के साथ प्यार ही कर लें अगर आप सन्तों से प्यार करेंगे तो सन्तों के पास ही जाएंगे। सन्तों का प्यार परमात्मा के साथ है आप ओटोमेटिक ही परमात्मा में जाकर समा जाएंगे।''

मैं आपको भरोसे की बात बताया करता हूँ कि मैंने आपको पहले भी सतसंग में 24 पी.एस. का वाक्या बताया है। वहाँ एक बुजुर्ग माता को महाराज सावन सिंह जी से 'नाम' मिला हुआ था। उस परिवार में कोई सतसंगी नहीं था, सब मीट-शराब खाते-पीते थे। उस माता को जितना भी समय मिलता वह भजन-अभ्यास करती। जब उस माता का अंत समय आया तो उसके लड़के ने कहा, ''लड़कियों को बुला लिया जाए?'' माता ने कहा, ''मेरा गुरु सफेद कपड़े पहने हुए मेरे पास खड़ा है। मैंने किसी लड़की से नहीं मिलना।''

इस बात का उस परिवार पर इतना असर हुआ कि माता के जाने के बाद सारे परिवार ने 'नाम' लिया और मीट-शराब छोड़ दिया। भरोसे वाला सतसंगी अपने परिवार को भी तार देता है बेशक उस माता के रहते हुए उस परिवार ने 'नाम' नहीं लिया था लेकिन उस बुजुर्ग माता की मौत ने ऐसा करिश्मा दिखाया कि सारा परिवार ही सन्तमत में आ गया। ये दोनों कहानियां मेरे जातिय तजुर्बे की हैं।

धन सम्पत तेरे काम न आवे। छोड़ चलो यह छिन में।।
आगे रैन अंधेरी भारी। काज करो कुछ दिन में।।

स्वामी जी महाराज माया के सेवकों के लिए कहते हैं, ''आप धन-दौलत इकट्ठा कर रहे हैं। यह धन दुनिया का कारोबार चलाने के लिए बनाया जाता है लेकिन हम उस धन के ऊपर बैठ जाते हैं। चाहे कोई भूखा रहे! लेकिन हम चाहते हैं कि सारी दुनिया का धन मेरे पास ही आ जाए।''

तू सोचकर देख! **कोई तेरा मित्र नहीं है**। गुरु के नाम के बिना कोई भी तेरे काम नहीं आएगा। इसमें से जो धन तू परमार्थ में खर्च कर लेगा वही तेरा है बाकी तूने यहीं छोड़कर चले जाना है। कबीर साहब कहते हैं:

माया होई नागिनी जगत रही लिपटाए।
जो इसकी सेवा करे तिसही को फिर खाए।

यह देही फिर हाथ न आवे। फिरो चौरासी बन में।।
गुरु सेवा कर गुरु रिझाओ। आओ तुम इस ढ़ग में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा ने इंसान का जामा एक मौका बख्शा है, इसे सारी योनियों का सरदार बनाकर भेजा है। बड़े आदमी की बड़ी जिम्मेवारियां होती हैं। परमात्मा ने हमें

अमोलक इंसानी जामा दिया है। हमें इस जामें की जिम्मेवारियों को भी समझना है। हमने इस जामें में बैठकर वह काम करना है जो हम चौरासी लाख योनियों- पशु-पक्षियों के जामें में नहीं कर सकते। अगर हमने इस जामें को शराबों-कबाबों विषय-विकारों में खो दिया आगे फिर चौरासी तैयार है; यह जीवन तो क्षण भंगुर है।

इंसानी जामें का फायदा हम एक ही तरीके से उठा सकते हैं कि गुरु हमें जो बताता है हमने उस रास्ते पर चलना है। भजन-सिमरन करके गुरु को अपने ऊपर खुश करना ही सबसे बड़ी चीज है इस तरह हम गुरु को अपने ऊपर मेहरबान कर सकते हैं।

सज्जनों! गुरु सदा ही हमारे ऊपर मेहरबान होता है, वह तो दया करना ही जानता है। जिस तरह दुनियावी पिता अपने बच्चे को प्यार करता है उसकी बेहतरी सोचता है उसके लिए हर कुर्बानी करने को तैयार रहता है अगर बच्चा गलत रास्ते पर जाएं तो पिता को कितना दुःख होता है! पिता बच्चे को हर तरीके से समझाता है अगर बच्चा न समझे तो वह पिता अदालत में जाकर बच्चे को बेदावा भी कर देता है लेकिन सन्त कभी भी बेदावा नहीं करते। वे सब्र को अपने हाथ से नहीं जाने देते, हमेशा दया करते हैं। सन्त सतसंग के जरिए अपने बच्चों को प्यार से समझाते हैं कि बेटा तुमने यह काम नहीं करना, यह काम करना है।

लुकमान पैगम्बर का लड़का बुरी संगत में पड़ गया। पैगम्बर साहब ने कहा, '' देख बेटा! अमुक लड़के की संगत नहीं करनी वह शरारती है तेरे मन में भी शरारते करने की आदत पैदा हो जाएगी।'' उस लड़के ने पैगम्बर साहब से कहा, ''मैं बहुत होशियार हूँ मैं कभी भी उसके कहने से बुरा कर्म नहीं करूंगा।'' पैगम्बर साहब का जातिय तजुर्बा था कि बुरी संगत आखिर बुरा असर दे ही देती

है। पैगम्बर साहब ने एक कोयला उठाकर कहा, ''बेटा! यह कोयला हाथ में पकड़ लेकिन जरा यह ख्याल रखना कि हाथ काला न हो जाए।'' वह लड़का अपने आप ही कहने लगा, ''पिता जी! जब मैं इस कोयले को हाथ में पकडूगा तो यह कैसे हो सकता है कि हाथ काला न हो?'' पैगम्बर साहब ने कहा जब कोयला हाथ में पकड़ने से हाथ काला हुए बिना नहीं रह सकता तो यह कैसे हो सकता है कि तू बुरे लड़के की संगत में जाकर शरीफ रह जाए?

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आप गुरु का दिया हुआ भजन-सिमरन करें तभी पापों-ऐबों से बच सकते हैं। अगर हम मन की सोहबत में रहेंगे तो पता नहीं यह कब हमें धोखा दे जाए? सबसे ज्यादा धोखेबाज हमारा दुश्मन हमारे अंदर है इसने बाहर से नहीं आना अंदर से ही आपको धोखा दे देना है।''

गुरु बिन तेरा और न कोई। धार बचन यह मन में।।
जगत जाल में फँसो न भाई। निस दिन रहो भजन में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''इस जगत में गुरु के बिना **कोई तेरा मित्र नहीं**, हमदर्द नहीं। सारी दुनिया गरजों से बंधी हुई है। गुरु का प्यार बेगरज है। दिन-रात, सोते-जागते गुरु के दिए हुए 'शब्द' के साथ जुड़े रहें।

साध गुरु का कहना मानो। रहो उदास जगत में।।
छल बल छोड़ो और चतुराई। क्यों तुम पड़ो कुगति में।।

सन्त-महात्माओं का कहना मानें। वे जो कहते हैं आप उस पर अमल करें। वे आपके फायदे के लिए ही मुँह से वचन निकालते हैं। आप मन के फरेबो से बचें, गुरु से छल न करें गुरु आपके अंदर 'शब्द-रूप' होकर बैठा है, आपकी हर हरकत को देख रहा है।''

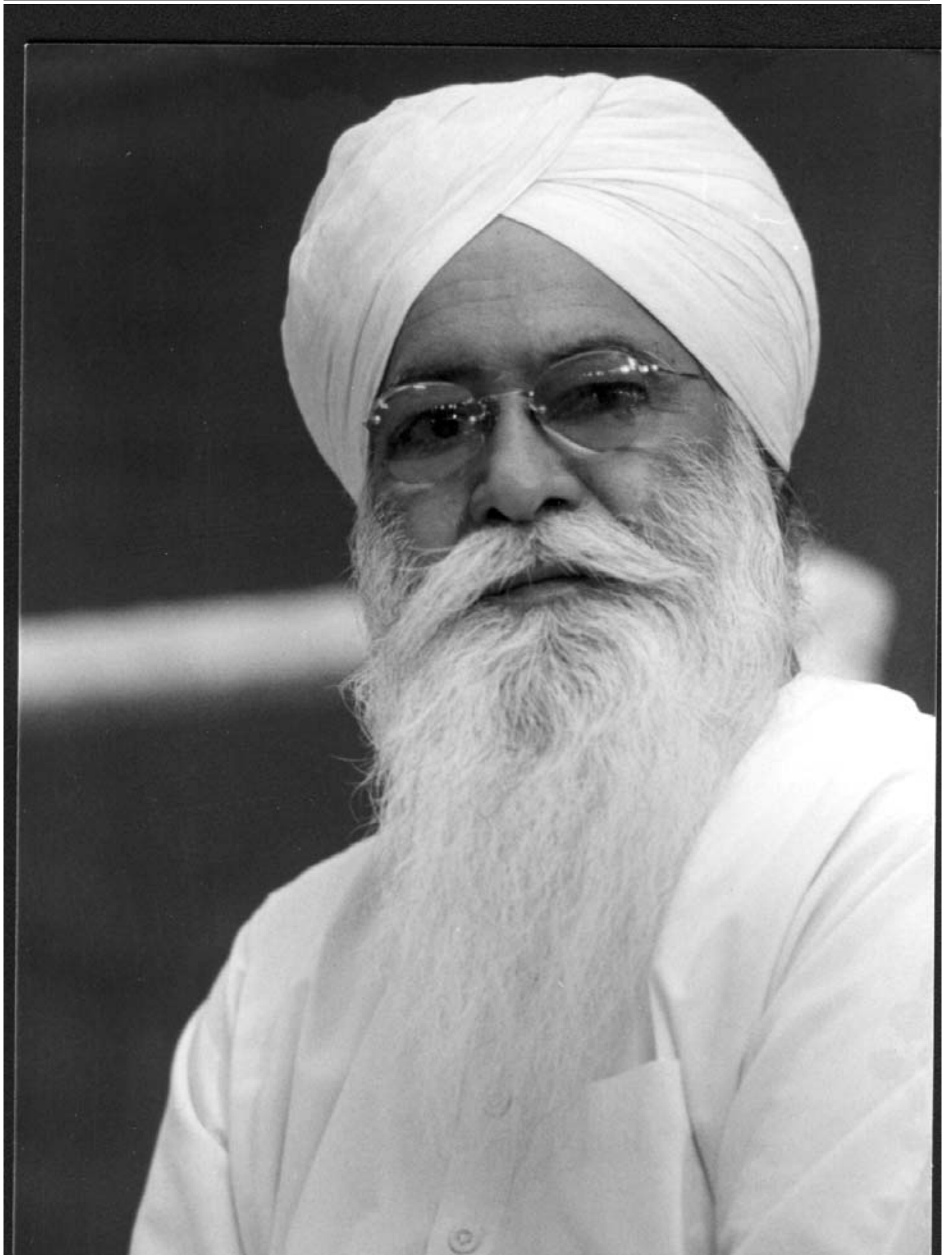

अफसोस! पहले मन कहता है कि भोग भोग ले! फिर कहता है शराब पी ले! ये सब कुछ करके हम कहते हैं कि हमें माफी दें। सन्त कहते हैं कि भजन करो लेकिन हम फिर भी भजन नहीं करते। मन हमारे साथ छल करता है। सोचकर देखें! आपका गुरु कहाँ है? जब आप कोई हरकत करते हैं तो वह आपको देख रहा होता है।

मैं बताया करता हूँ, ''गुरु दयालु पुरुष होता है। वह कभी दया का अंग नहीं छोड़ता उसके पास बहुत माफी है, वह जीवों को माफी देने के लिए ही आता है। वह कई बार हमारी बुरी हरकतें देखता है लेकिन वह बड़ा सब्र वाला और पर्दापोश होता है। हम फिर भी उसके पास जाकर सच्चे-सुच्चे इंसान बनकर बैठ जाते हैं। वह कहता है कि यह आज नहीं समझा फिर समझ जाएगा। वह कई बार कह भी देता है कि तू बहुत अच्छा है। आप यह न समझें कि उसे पता नहीं। सज्जनों! आप सोचते बाद में हैं वह पहले हमारी आवाज को सुन लेता है, वह तो आपके नजदीक से नजदीक है।''

जिन्होंने इस मत को समझ लिया है जो सच्चखंड पहुँच जाते हैं वे सन्तों के कहने के मुताबिक अपना जीवन ढ़ाल लेते हैं। वे आज तक गुरुमत को झुठला नहीं सके। उन लोगों ने अंदर जाकर गवाही दी कि सच अंदर है। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बसे बनारसी सिख समुद्र तीर।
इक पल बिछुड़े नाहीं जे गुण होए शरीर।

सुमिरन करो गुरु को सेवो। चल रहो आज गगन में।।
कल की खबर काल फिर लेगा। वहाँ तुम जलो अगिन में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''सन्त आपको जो सिमरन देते हैं आप उसे ईमानदारी और पवित्र ख्यालों से करें। सिमरन के

जरिए ही हम फैले हुए ख्यालों को तीसरे तिल पर एकाग्र कर सकते हैं। तीसरे तिल से हमारा खास सम्बंध है क्योंकि हमारे सफर की शुरूआत तीसरे तिल से ही होती है। अगर हम सही ढंग से सिमरन करें और हमारे सिमरन का कोर्स पूरा हो जाए तो जो 'शब्द' हमारे अंदर आ रहा है वह फौरन ऊपर खींच लेगा। आत्मा एक मंडल से दूसरे मंडल को 'शब्द' के जरिए ही पार करती है। हमें 'शब्द' सुनाई तो देता है लेकिन सिमरन कम होने की वजह से ख्याल इकट्ठा नहीं होता तो 'शब्द' हमें ऊपर नहीं खींचता।''

मैं बताया करता हूँ कि जब तक लोहा चुम्बक के दायरे में नहीं आता तब तक चुम्बक लोहे को कैसे खींच सकता है? इसी तरह हमने आत्मा को 'शब्द' के दायरे में लेकर जाना है ताकि 'शब्द' आत्मा को ऊपर खींच ले।

अबही समझ देर मत करियो। न जानूं क्या होए इस पन में।
यों समझाय कहें राधास्वामी। मानों एक बचन में।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''देर मत करो, आज का काम कल पर मत छोड़ो। जो मन आज आपको यह कहता है कि कल भजन कर लेंगे या रात बड़ी है या फिर भजन कर लेंगे वह मन कल भी आपके पास ही होगा। परमात्मा की क्या प्लेनिंग है पता नहीं वह कब हमें बुला ले?'' कबीर साहब कहते हैंः

कल करन्ता अब कर अब करता सोई ताल।
पाछे कछु न होवी जे सिर पर आया काल।

परमात्मा ने हमें तंदरूस्ती, जवानी दी हैं। हमें इस वक्त से पूरा फायदा उठाना चाहिए। पता नहीं कब आवाज पड़ जाए हम इस भरे बाजार को छोड़कर चले जाएं!

दरिया बह रहा था रास्ते में फेरी दरिया के दो हिस्से कर रही थी। गुरु नानकदेव जी महाराज दरिया के पानी की हालत को देखकर अपने भजन में लिखते हैं:

नदियां वाहे विछुनियां मेला संजोगी राम।

अब का बिछड़ा यह पानी पता नहीं इकट्ठा होगा या नहीं? क्योंकि पानी की अलग-अलग दिशा हो गई हैं। यह इंसानी जामा परमात्मा से मिलने का मौका है अगर हम इससे बिछुड़ गए तो पता नहीं फिर हमारा मिलाप हो या न हो? या हमारा जन्म किसी ऐसी जगह हो जाए कि हम भूले-भटके भी परमात्मा की तरफ न आ सकें, उसकी भक्ति न कर सकें।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जो प्रेमी है जिनके दिल में परमात्मा से मिलने का शौक है उनके लिए सन्तों का एक वचन ही काफी होता है। सन्त जो कहते हैं प्रेमी वह कर लेते हैं। बाकी हम एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं।

हमारे राजस्थान की आम कहावत है कि एक पिता अपने बच्चों को नसीहत दे रहा था कि बेटा! ये काम तुम्हारे फायदे के हैं ये काम तुम्हारे फायदे के नहीं। वहाँ खड्ड के अंदर चींटिया जा रही थी और खड्ड से बाहर आ रही थी। बच्चों का ख्याल पिता की बात की तरफ नहीं था उनका ध्यान चीटियों की तरफ था। पिता ने बच्चों से पूछा क्यों बच्चा! कुछ समझ आई? बच्चों ने कहा यहाँ से तो अनेको ही चींटियां खड्ड में गई और अनेकों ही खड्ड से निकल गई। हमारी हालत भी उस परिवार जैसी है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमीः *महाराज जी! जब हमने कोलंबिया में आपकी बीमारी के बारे में सुना तो हम घबरा गए। हम सबने महाराज कृपाल के आगे प्रार्थना की कि आप जल्दी ठीक हो जाएं। हम जानना चाहते हैं कि इस बीमारी का आपके ऊपर क्या असर पड़ा और अब आपकी सेहत कैसी है?*

बाबाजीः आप लोगों ने जो हमदर्दी दिखाई उसके लिए धन्यवादी हैं। हो सकता है आपकी प्रार्थना से ही हजूर ने मुझे फिर आपकी सेवा के लिए तैयार किया है। आप लोगों ने तो उदास होना ही था लेकिन जो प्रेमी आश्रम में मेरी देखभाल कर रहे थे वे भी ज्यादा से ज्यादा उदास थे। कोई देखकर यह नहीं कह सकता था कि यह दोबारा शरीर में आएंगे। वैसे तो डॉक्टर हौंसला बढ़ाते हैं लेकिन जो डॉक्टर मेरी देखभाल कर रहे थे मैंने उनका हौंसला बढ़ाने की कोशिश की फिर भी वे मुझे छोड़कर चले गए। यह महाराज कृपाल का ही चमत्कार था जो उन्होंने मुझे आपकी सेवा के लिए इतनी जल्दी तैयार किया।

महाराज सावन सिंह जी अम्बाला के मोती राम टेलर मास्टर का जिक्र किया करते थे। मोती राम के बुलाने पर बाबा जयमल सिंह जी अम्बाला में एक महीने के लिए सतसंग करने के लिए गए। वहाँ काफी बड़ी हैसीयत का आदमी हुक्मसिंह रहता था, जिसे मोती राम 'नाम' दिलवाना चाहता था। मोती राम को ऐसा लगा कि हुक्मसिंह के नाम लेने से सतसंग की रौनक बढ़ जाएगी। उसे नामदान के लिए पेश किया गया लेकिन बाबा जयमल सिंह जी ने

मना कर दिया और कहा, ''चाहे दो सौ आदमियों को नाम दिलवा लो लेकिन इसे नाम न दिलवाओ।''

जब बाबा जी को ज्यादा मजबूर किया तो उन्होंने कहा, ''मैं एक महीने के लिए यहाँ आया हूँ अगर हुक्मसिंह को नाम दिलवाना है तो मैं एक शर्त पर ही इसे नाम दूँगा कि इसे नाम देने के बाद मैं यहाँ से डेरा ब्यास चला जाऊँगा।'' मोती राम ने कहा, ''हम डेरे आकर सतसंग सुन लेंगे लेकिन आप इसे नाम जरूर दें।'' बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''टाँगा बुलवाकर स्टेशन जाने के लिए मेरा सामान टाँगे में रख दें।'' बाबाजी ने हुक्मसिंह को नाम देकर स्टेशन पर जाकर ब्यास के लिए गाड़ी पकड़ ली।

लुधियाना के नज़दीक बाबा सावन सिंह जी का पिछला गाँव था। लुधियाना स्टेशन पर बाबा सावन सिंह जी बाबा जयमल सिंह जी से मिले, उनका हाल-चाल पूछा और कहा, ''मेरा गाँव यहाँ से नज़दीक है। आप थोड़ा आराम करने के बाद ब्यास चले जाना, माता जी भी आपके दर्शन कर लेंगी।'' बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''अब तो मेरे पास समय नहीं मैं डेरे जा रहा हूँ। आप इस रविवार को डेरे नहीं आना अगले रविवार को डेरे आना।''

बाबा सावन सिंह जी ने सोचा! शायद हमारे काम की वजह से आप हमें डेरे आने से मना कर रहे हैं। आमतौर पर जब भी हमें छुट्टी मिलती तो हम डेरे चले जाते, घर के काम की कोई परवाह नहीं करते थे। बाबा जयमल सिंह जी हमें डाँटकर वापिस भेज देते।

सन्तों के अन्दरुनी राज़ को सन्त ही जानते हैं। डेरे पहुँचकर बाबा जयमल सिंह को इतना तेज बुखार हुआ कि नीचे का साँस नीचे और ऊपर का साँस ऊपर रह गया। बहुत से प्रेमियों ने

आपको दवाई खाने के लिए कहा लेकिन आपने मना कर दिया कि पंद्रह दिन तक दवाई न दें बाद में दे देना।

महाराज सावन सिंह जी ने कहा कि जब पंद्रह दिन बाद हम डेरे गए तो बाबा जयमल सिंह जी का मुँह पीला हुआ पड़ा था जैसे खून बिलकुल ही नहीं था। देखकर बहुत अचरज हुआ और दिल को बहुत कष्ट हुआ अगर हम पास होते तो आपकी सेवा करते।

सावन सिंह जी ने बाबा जयमल सिंह से कहा कि आपको इतना कष्ट था तो आपने हमें डेरे आने से क्यों रोका? बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''बर्खुरदार! तूने अभाव ले आना था कि सन्तों की ऐसी हालत! इसलिए तुझे अपने पास नहीं बुलाया।'' सावन सिंह जी ने इसका राज़ पूछा? बाबा जयमल सिंह ने कहा, ''तुझे हज़म नहीं होगा।'' सावन सिंह जी ने कहा, ''मैं वायदा करता हूँ कि आपके जीवनकाल में किसी को नहीं बताऊँगा, बाद में किसी को बताने की मेरी मर्जी होगी।'' महाराज सावन सिंह जी सतसंग में बताया करते थे कि काल ने हुक्म सिंह को कई जन्म गरम तवे पर बिठाना था, उसके कर्म बड़े सख्त थे जिन्हें बाबा जयमल सिंह जी ने अपनी देह पर भुगतान करवाया।

इस राज़ को खोलना मुनासिब नहीं। मैंने जिसे मुनासिब समझा उसे बड़े प्यार से जानकारी दे दी है। सन्तों को जो काम उनका गुरु देता है वे उस काम को बड़े प्यार से करते हैं और कोई शिकायत नहीं करते कि हम तकलीफ में हैं। सन्तों का अपना कोई ऐसा कर्म नहीं होता वे कर्मों से बरी होते हैं। सन्त संसार में हम जीवों को ठंडक देने के लिए ही आते हैं। आप दुनिया की हालत देखते हैं कि दुनिया में धर्म के नाम पर कितना कुछ हो रहा है। एक

मुल्क दूसरे मुल्क पर तोपें कसकर बैठा है। इस सड़ती-बलती दुनिया के लिए कबीर साहब कहते हैं:

सन्त न होते जगत में तो जल मरता संसार।

सन्त जब संसार में आकर नाम के छींटे देते हैं तो जो लोग उनके संपर्क में आते हैं उनके अंदर से मुल्क का लिहाज निकल जाता है और वे सच्ची भक्ति में लग जाते हैं। जहाँ सच्ची भक्ति होती है वहाँ परमात्मा अपने बच्चों के आसपास शान्ति रखने की कोशिश करता है।

बेशक मैं दो महीने से बीमारी का भुगतान कर रहा था लेकिन मुझे इस बात की उदासी थी कि मासिक सतसंग केंसिल करना पड़ेगा। ग्रुप आया हुआ था मैं ग्रुप की सेवा नहीं कर सकूँगा। प्रेमी उदास हो जाएंगे। सन्तों को संगत अपने प्राणों से प्यारी होती है। बाबा सावन सिंह जी की याद में एक भजन लिखा है:

मांवां नूं हैं पुत्र प्यारे, तैनूं भगत प्यारे हो,
भगतां दे वस हो के दाता, सारे काज सवारे हो।

जैसे माता को अपने पुत्र प्यारे होते हैं इसी तरह भगवान को अपने भक्त प्यारे होते हैं, भक्तों के बस में होकर वह उनकी मदद करता है। आम कहावत है कि भगवान भक्तों के बस में है।

बाबा सावन सिंह जी बहुत से प्रेमियों के कर्मों का भुगतान अपने शरीर पर करके सच्चखण्ड गए। उस समय संगत आपसे फरियाद करती थी कि आप बाबा जयमल सिंह जी से कहें कि आपको कुछ समय और यहाँ रहने दें। आपने कहा कि ऐसा करने से मेरी गुरुमुखता में फर्क आता है, मैं ऐसा नहीं कह सकता। आप

अपनी फरियाद जारी रखें। बाबा जयमल सिंह जी ने अपना काम करना है और मैंने उनका दिया हुआ काम करना है।

मैं उन दिनों इस बात से वाकिफ नहीं था कि परम पिता कृपाल बाबा सावन सिंह जी के इतने नज़दीकी शिष्य हैं। मैंने महाराज कृपाल के मुखारविंद से यह बात सुनी, महाराज कृपाल बाबा सावन सिंह जी से कहते कि आप सब कुछ कर सकते हैं, आप अपने आपको तंदुरुस्त रखें। बाबा सावन सिंह जी चुप रहते आखिर एक दिन आपने महाराज कृपाल से कहा, ''तू मेरी चारपाई के पास बैठ जा और आँखें बंद करके अंदर देख आज सच्चखण्ड में फैसला होने वाला है।''

जब बाबा सावन सिंह जी महाराज कृपाल को तवज्जो देकर अंदर लेकर गए, अंदर सब सन्त इकट्ठे थे। मालिक के प्यारे सन्तों का आपस में बहुत प्यार होता है, वे सब आपस में सहेलियाँ होते हैं। सारे सन्तों ने कहा कि बाबा सावन सिंह को कुछ समय और रहने दिया जाए, संगत बहुत पुकार कर रही है लेकिन बाबा जयमल सिंह जी नहीं माने। जयमल सिंह जी ने कहा कि हालात बहुत खराब हैं अब मैं उन्हें वहाँ नहीं रहने दूँगा।

जब फैसला हो गया तो बाबा सावन सिंह जी ने परमपिता कृपाल से कहा, ''तूने फैसला देख लिया सुन लिया।'' बाबा सावन सिंह जी ने अंदर सब कुछ दिखाकर अपनी प्यार भरी नजर उन पर डाली। जब आँखें चार हुई तो महाराज कृपाल ने अपनी आँखें बंद कर ली फिर आँखें खुली नहीं अंदर जाकर लग गई। तब महाराज कृपाल ने सिर झुका दिया। परम पिता कृपाल कहा करते थे, ''आँख ही आँख को देती है।''

ताई जी ने मुझे बताया था कि जब महाराज कृपाल का आखिरी समय आया उस समय ताई जी ने आपके आगे विनती करके कहा कि आप सावन सिंह जी से कहें कि वह आपको कुछ समय और संसार में रहने दें। महाराज कृपाल ने भी यही कहा, ''ऐसा कहने से मेरी गुरुमुखता में फर्क आता है तू कह ले।''

सन्त मालिक के भाणे में रहते हैं कभी ऐसी फरियाद नहीं करते और अपने सेवकों से भी यही कहते हैं कि आप मालिक के भाणें में रहें और मालिक का भाणा मानें। परमात्मा जो भी करता है हमारी बेहतरी के लिए ही करता है। हम जीव आँखें होते हुए भी अन्धे हैं क्योंकि हमने अंदर जाकर उस प्रकाश को नहीं देखा होता। हम नहीं जानते की हमारा फायदा दुख में है या सुख में है!

महाराज सावन सिंह जी अपनी माता के अंत समय की घटना सुनाया करते थे कि जिस दिन आपकी माता चोला छोड़ने की तैयारी में थी उसके अगले दिन आपने डेरे में सतसंग करने जाना था। आप बहुत उदास हुए आपने सोचा संगत वापिस जाएगी, संगत मुझे जान से प्यारी है। माता जी ने आपकी उदासी का कारण पूछा। माता जी ने अंदर ध्यान लगाकर बाबा जयमल सिंह जी से मिलाप किया और कहा कि बच्चा बहुत उदास है अगर कल वह संगत से नहीं मिला तो संगत उदास होकर वापिस जाएगी।

बाबा जयमल सिंह जी आमतौर पर सावन सिंह जी के लिए बड़ा इज्जत भरा लफ्ज़ बर्खुरदार इस्तेमाल किया करते थे। पंजाबी का यह लफ्ज़ काफी इज्जत मान वाला है। जयमल सिंह जी ने माता से कहा, ''जब बर्खुरदार सतसंग करके वापिस आएगा हम उसके आने पर ही आपको ले जाएंगे।''

बाबा सावन सिंह माता जी को उसी हालत में छोड़कर सतसंग करने के लिए चले गए। आप सतसंग के बाद थोड़ा थके हुए थे आपने सोचा मेरे वापिस जाने पर ही बाबा जी माता जी को लेकर जाएंगे क्यों न आज रात यहाँ डेरे में ही थोड़ा आराम कर लें, कल सारा क्रियाक्रम करना है। आप रात को डेरे में ही रूक गए।

सावन सिंह जी ने सुबह उठकर कुछ प्रेमियों से कहा कि आज माता जी ने चोला छोड़ना है जिसे दर्शन करने हैं वे आ जाएं। आप स्टेशन पहुँचकर जब गाँव जाने लगे तो आपको एक आदमी मिला आपने उससे पूछा कि माता जी का क्या हाल है? उसने कहा ठीक है रात को बाबा जी लेने के लिए आए थे लेकिन आप नहीं आए थे इसलिए बाबा जी वापिस चले गए।

जब सावन सिंह जी घर पहुँचे तो माता जी ने अंदर ध्यान लगाया। बाबा जयमल सिंह जी ने पूछा, ''क्या बर्खुरदार आ गया है?'' माता जी ने कहा, ''हाँ! वह आ गया है।'' माता जी ने कहा, ''अच्छा बेटा! बाबा जी आ गए हैं और मैं जा रही हूँ।'' बाबा सावन सिंह जी कहने लगे कि बेशक माता से मेरा बहुत प्यार था लेकिन मैंने खुश होकर इजाजत दी। बाबा जी लेने आए थे इसलिए मैंने माता जी को खुशी-खुशी भेजा।

सन्तों को संगत अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी होती है। जब ऐसा मौका आता है तो सन्तों को यही उदासी होती है कि संगत उनसे मिलने के लिए आई है और वे उदास न चली जाए। जो रियायत सावन सिंह जी की माता ने प्राप्त की हर आत्मा ऐसी रियायत प्राप्त नहीं कर सकती।

सुन्दरदास का इंटरव्यू महाराज कृपाल से हुआ था। वह कुछ समय महाराज सावन सिंह जी की सेवा में रहा। वह सावन सिंह

जी की माता जी के बारे में बताया करता था कि आप बहुत अच्छी थी और अपने गुरु की आज्ञा का पालन किया करती थी। उस समय आटा पीसने वाली मशीनें नहीं होती थी वह बाबा जयमल सिंह के लंगर के लिए हाथ वाली चक्की से गेहूँ पीसकर संगत के लिए आटा तैयार करती थी। आपने बाबा सावन सिंह जी के समय में भी बहुत सेवा की आप बहुत भरोसे वाली थी।

सवाल तो अपने बर्तन का है। हम ऐसी कहानियाँ सुनते हैं लेकिन जो सन्त-सतगुरु कहते हैं हम उस पर चलते नहीं। शराब भी पीते हैं ऐब भी करते हैं फिर हम कहते हैं कि हमसे ऐसा हो गया। सन्तों के पास तो माफी ही होती है। ऐसी रियायतें वही आत्मा प्राप्त करती है जो सतगुरु की आज्ञा का पालन करती हैं। कबीर साहब का वाक हैः

जैसी लौ पहले लगी तैसी निबहै ओड़।
अपनी देह की क्या गत तारे पुरुष करोड़।

एक प्रेमीः *खुद को सुधारने के लिए और गुरु की दया प्राप्त करने के लिए सेवक को क्या करना चाहिए?*

बाबाजीः मैं इस बारे में काफी कुछ बता चुका हूँ और सन्तबानी मैगजीन में भी छप चुका है। इस बारे में मैं इन सतसंगों में भी बहुत कुछ बोल चुका हूँ। हर प्रेमी ने मैगजीन लगवाई तो है लेकिन आप मैगजीन पढ़ते नहीं अगर पढ़ते हैं तो उस पर विचार नहीं करते। बहुत आदमी गवाही देते हैं कि जब वे सतसंग सुनते हैं तो कहते हैं कि हमारे सवाल का जवाब मिल गया है लेकिन जो लोग सतसंग को अपने ऊपर नहीं ढ़ालते वे अगले दिन आकर वही सवाल कर देते हैं।

मेहनती आदमी हमेशा कामयाब होता है, चाहे रूहानियत में मेहनत करता है चाहे दुनियादारी के काम में मेहनत करता है। सारे सन्त मेहनत करने और पवित्र जिन्दगी जीने पर जोर देते हैं अगर हमारे ख्याल पवित्र होंगे तो हमारी जिंदगी पवित्र होगी और हमारे अंदर पवित्र रोज़ी-रोटी कमाने का भी उद्यम होगा। 'शब्द-नाम' की कमाई करने से हमारे अंदर अच्छा उद्यम होगा।

मन चाहे जो करे, जे लगया रहे।

हम मन में तड़फ तो जरूर रखते हैं कि हम सचखण्ड पहुँचे रुहानियत में मालोमाल हो जाएं और गुरु हमारा पर्दा खोले लेकिन हम मेहनत नहीं करते। हमारा अपने खान-पान या सोहबत पर कंट्रोल नहीं। हम यह परख नहीं करते कि हमारी सोहबत अच्छी है या बुरी है। हमें महाराज जी के कहे अनुसार अपनी पड़ताल करनी चाहिए अगर हम रोजाना अपनी जिन्दगी की पड़ताल करेंगे तो हमें पता लगेगा कि हम कितनी गलतियाँ करते हैं। डायरी भरते समय यह लिख लेना काफी नहीं, वही गलती दोबारा नहीं होनी चाहिए। मुझे बहुत से प्रेमी डायरी दिखाते हैं उसमें बार-बार वही गलती दोहराई होती है। राजस्थान की मिसाल हैः

पंचायत आई सिर मत्थे, परनाला ओथे ही।

किसी ने गलत ढंग से परनाला लगा दिया दूसरे लोगों ने पंचायत बुलाई और उसे बुलाया गया तो उसने कहा कि हाँ जी! अभी ठीक कर देता हूँ लेकिन उसने परनाले को वहीं रखा। हमारी भी यही हालत है हम सतसंग सुनते हैं, गुरु से प्यार करते हैं, डायरी भी भरते हैं लेकिन वही गलती बार-बार करते हैं और उद्यम करने के लिए तैयार नहीं।

अगर हमारा कोई दुनियावी नुकसान हो जाए तो हम रात को सो नहीं पाते, हमें खाना भी अच्छा नहीं लगता क्योंकि हमें नुकसान नजर आता है। हम जब तक अंदर नहीं जाते हमें रुहानियत का नुकसान नजर नहीं आता, हमें अंदर जाकर पता लगता है कि क्या हमने उस नुकसान के लिए कभी मेहनत की, कभी रात को जागे? अगर हम कभी रात को उठकर बैठ भी जाते हैं तो उस समय भजन की बदौलत दुनियावी चीज़ें ही माँगते हैं। दिल से उद्यम नहीं करते। दस दिन भजन पर बैठते हैं फिर पाँच दिन बैठते ही नहीं। यह अभ्यास नहीं प्रेम नहीं अगर प्रेम हो मोहब्बत हो तो हम सब काम छोड़कर अभ्यास करें और अपने आपको बेहतर बनाए।

काल ने आत्माओं को संसार में फँसाने के लिए सिनेमा की खोज की है। लोग सिनेमा में जाते हैं तीन-चार घंटे बैठते हैं पैसे खर्च करते हैं, समय खराब करते हैं जिसका हमारी सेहत पर बुरा असर पड़ता है। हम बुरी फिल्में देखेंगे तो हमारा ख्याल भजन में कैसे लगेगा? टेलिविजन की खोज भी की है ताकि कोई भी जीव अंदर न जाए बाहर रहकर ही बाहरमुखी हो जाएं।

मैंने अपनी जिन्दगी में सन्तबानी आश्रम अमेरिका में अपनी बनी फिल्म देखी कि ये लोग कैमरा लेकर किस तरह फिल्म बनाते हैं। आर्मी में हमें सप्ताह में एक बार मुफ्त फिल्म दिखाते थे। मैं उस दिन किसी की ड्यूटी दे देता पहरे पर खड़ा हो जाता जबकि परमपिता कृपाल की दया से मेरी यह ड्यूटी माफ थी लेकिन मैं सिनेमा देखने नहीं जाता था। मेरे अफसर कहते कि तू सिनेमा देखने क्यों नहीं जाता? मैं हँसकर कहता, ''जहर मुफ्त की भी बुरी होती है।''

हम एक बार नाभा से देहरादून जा रहे थे। उस समय मैं वायरलेस ऑपरेटर था, मैंने वहाँ सेट लेकर जाना था। हमारे साथ

हमारा सिग्नल ऑफिसर और सैकिंड सिग्नल ऑपरेटर था। रास्ते में सहारनपुर के पास हमारा ट्रक खराब हो गया। तूफान चल रहा था, ओले पड़ रहे थे कोई इन्तज़ाम नहीं हो रहा था और रात गुजारनी भी मुश्किल हो रही थी।

मेरा ऑफिसर कहने लगा कि चलो! हम तीनों ताश खेलते हैं। उन दोनों को तो ताश खेलने की बहुत आदत थी लेकिन मैंने अपनी जिंदगी में कभी ताश को हाथ नहीं लगाया था, मैं इसे जुआ समझता था। उन्होंने मुझसे कहा अगर तुझे ताश खेलना नहीं आता तो हम सिखा देंगे। मैंने कहा, ''बुराई सीखनी भी गुनाह है।'' उन्होंने मुझसे कहा तू बाहर जाकर खड़ा हो जा। मैं तकरीबन तीन-चार घंटे बारिश में खड़ा रहा। मैंने वह सजा मंजूर कर ली लेकिन मैं ताश नहीं खेला।

आज भी वह ऑफिसर जिन्दा है। वह मुझे जहाँ भी देख लेता है तो कम से कम सौ फुट की दूरी से नंगे पाँव लेटकर नमस्कार करता है। वह कहता है कि आर्मी में रहकर इस तरह का जीवन जीना मायने रखता है। हम इन छोटी-छोटी बातों को बुराईयाँ नहीं समझते अगर हम इन बातों से बचेंगे तो हमारा फायदा होगा हमारे ख्याल पवित्र होंगे और शरीर का उद्यम बना रहेगा।

एक प्रेमीः *ग्रुप में हिन्दुस्तान आने से पहले जूडिथ प्रेमियों को हिदायतें भेजती है कि आश्रम पहुँचकर दस दिन के प्रोग्राम में हमें ज्यादा से ज्यादा एकान्त में रहने की कोशिश करनी चाहिए और बातचीत से परहेज रखना चाहिए। आप कृपया हमें इस बारे में कुछ बताएगें?*

बाबाजीः हम जिस काम के लिए आते हैं उसकी सोच-विचार पहले से ही हमारे दिल में होती है। मैंने पहले भी बताया है कि हर

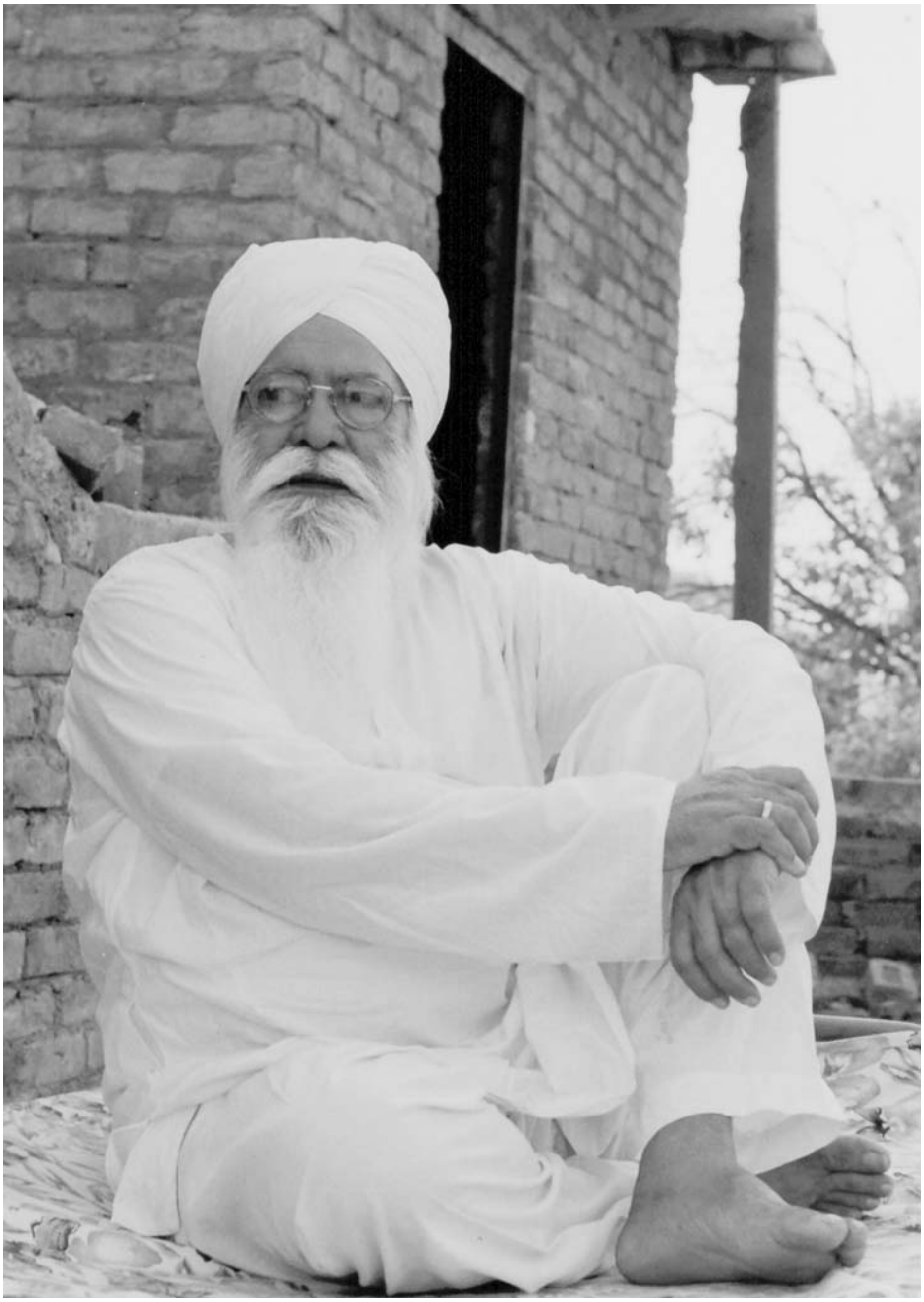

प्रेमी को यहाँ आने से पहले तैयारी करके आना चाहिए। तैयारी का मतलब है कि आप पहले अभ्यास में बैठना सीखें अगर हमारा ख्याल पहले से ही उस तरफ होगा तो यहाँ लगातार सिमरन करना आसान हो जाएगा। हमें चुप रहने में काफी मदद मिलती है।

महाराज सावन और महाराज कृपाल ने भी एकान्त पर बहुत जोर दिया है। हम जितनी ज्यादा बातें करते हैं उतना ही हमारा ख्याल बाहर की तरफ दौड़ता है। शुरु-शुरु में हमें मुश्किल महसूस होती है क्योंकि हमारा ध्यान संसार की तरफ फैला होता है, हमें बाहर की बातों का रस पड़ा होता है जिसे छोड़ना बहुत मुश्किल होता है। जब हम अपनी बोलचाल पर कंट्रोल कर लेते हैं फिर हमें इसकी अहमियत का ज्ञान होना शुरु हो जाता है तो हमारा स्वभाव उसी तरह का बन जाता है फिर हम चलते-फिरते, उठते-बैठते परमार्थ के लिए सोचेंगे, परमार्थ की ही बातें करेंगे।

यहाँ आने वाले प्रेमी मेहनत से पैसा कमाकर अपनी टिकट का इन्तजाम करते हैं। मैंने कहा हुआ है कि कर्ज उठाकर यहाँ न आएं। जब आप यहाँ आते हैं तो मैं स्वागत के समय भी आपसे यही कहता हूँ कि आप जिस मकसद के लिए यहाँ आए हैं उस मकसद को आँखों के सामने रखकर अपना भजन-सिमरन करें।

आप बहुत कीमती समय निकालकर अपने घर के बंधनों को ढ़ीला करके यहाँ आते हैं अगर यहाँ आकर आप फिजूल की बातों में अपना समय बर्बाद करेंगे तो आपको यहाँ आने से क्या फायदा होगा? आप यहाँ महात्मा से फायदा उठाने के लिए आए हैं अगर महात्मा की हिदायत के मुताबिक भजन-सिमरन करेंगे तो आपको जरूर फायदा होगा। जो प्रेमी इस पर अमल करते हैं वे मुझे अपने अच्छे अनुभव भी बताते हैं जिससे मेरा दिल बहुत खुश होता है।

महाराज सावन सिंह जी बहुत जोर देकर कहा करते थे,''आप जब सतसंग में बैठें तो आपकी निगाह पाठी की तरफ भी नहीं जानी चाहिए। आपका ध्यान गुरु के मस्तक की तरफ होना चाहिए अगर गुरु किसी के साथ बात कर रहा है तो आप उस तरफ भी तवज्जो न दें। सतसंग सुनकर और अभ्यास करके आपका हृदय भरा होता है। आप जैसे-जैसे लोगों के साथ बातचीत करेंगे आपमें से रुहानियत और अंदर जो गुरु के दर्शन टिके है धीरे-धीरे खाली हो जाएंगे और दुनिया भर जाएगी।''

सब सन्तों ने एकान्त पर जोर दिया है। सन्त यह नहीं कहते कि जंगलों पहाड़ो में छिप जाएं या घर की जिम्मेवारियां छोड़ दें। आपने अपनी जिम्मेवारियाँ निभाते हुए एकान्त रखना है। हम घर को भी जंगल बना सकते हैं।

मैं अपने बारे में बताया करता हूँ कि जब मुझे 'दो-शब्द' का भेद मिला, मैंने अठारह साल जमीन के नीचे बैठकर अभ्यास किया। मैंने अपने खेत में इस तरह से दीवार बनाई हुई थी कि कोई भी आदमी मेरे पास न आए। गेट पर एक आदमी बिठा रखा था। किसी आम आदमी को अंदर आने का मौका नहीं दिया जाता था। मैं किसी जरूरी काम से ही बाहर निकलता था।

यहाँ आश्रम में ऐसे भी प्रेमी है जिनके रहते हुए मैंने अभ्यास किया है। मैं यहाँ आश्रम में एकान्त में ही रहता हूँ, यहाँ रहने वालों को मैं तकरीबन दो-दो सप्ताह तक नहीं मिलता। कोई खास आदमी दूर से आए या कोई रुहानियत का सवाल लेकर आए तो मैं उससे मिल लेता हूँ। ऐसा नहीं कि मैं आश्रम की जिम्मेवारी नहीं निभाता। मैं एक किसान हूँ, छोटी से छोटी चीज़ भी मेरी निगाह में है। मैं खेती करने में गुरुमेल को सहयोग भी दे रहा हूँ।

जूडिथ ने आपको फायदे की बात बताई है। हम इस पर अमल करेंगे तो हमारा ही फायदा है। शुरु-शुरु में मुश्किल लगता है क्योंकि हमें बाहरमुखी बातों की आदत पड़ी होती है लेकिन बाद में हमें एकान्त की आदत बन जाती है। हम लोगों से बातें करते हुए भी एकान्त बना सकते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

हथ कार वन्नी दिल यार कन्नी।
मुख दी बात सगल स्यों करदा।
जीव संग प्रभ अपने घरदा।

***

धन्य अजायब

16 पी.एस.आश्रम में 2013 में सतसंग के कार्यक्रम

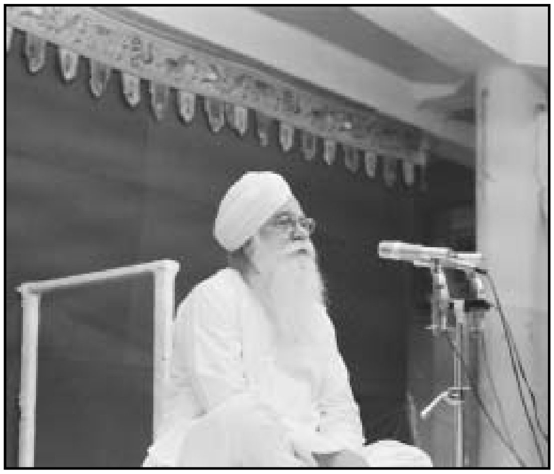

02 से 04 अगस्त

07 से 11 सितम्बर

25 से 27 अक्टूबर

22 से 24 नवम्बर

27 से 29 दिसम्बर

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से अहमदाबाद में 5,6 व 7 जुलाई 2013 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन

फुटबाल ग्राउंड के सामने

(कांकरिया झील के पास)

अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)

शैलेष शाह - 99 98 94 62 31, 97 25 00 57 94